# अपने श्रेष्ठ स्वमान के फ़खुर में रह असम्भव को सम्भव करते बेफिक्र बादशाह बनो

बेफिकर बादशाह

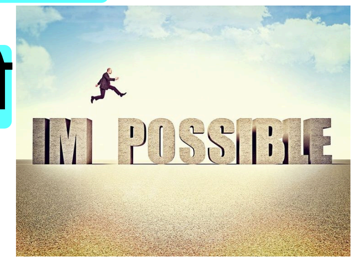

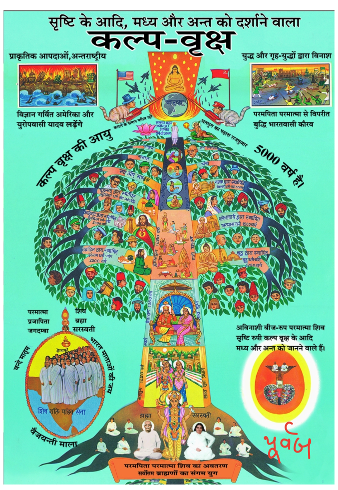

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ स्वमानधारी विशेष बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे का स्वमान इतना विशेष है जो विश्व में कोई भी आत्मा का नहीं है। आप सभी विश्व की आत्माओं के पूर्वज भी हो और पूज्य भी हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त हो। सारे विश्व के पूर्वज पहली रचना हो। बापदादा हर एक बच्चे की विशेषता को देख खुश होते हैं। चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बुजुर्ग मातायें हैं, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं। हर एक की अलग-अलग विशेषतायें हैं। आजकल कितने भी बड़े ते बड़े साइंसदान हैं, दुनिया के हिसाब से विशेष हैं जो प्रकृतिजीत तो बनें, चन्द्रमां तक भी पहुंच गये लेकिन इतनी छोटी सी ज्योति स्वरूप आत्मा को नहीं पहचान सकते! और यहाँ

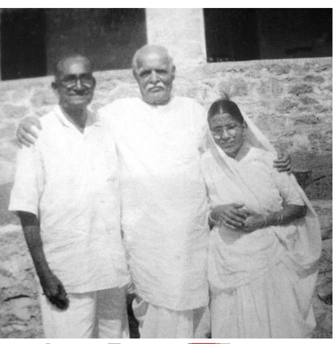

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥
अच्छी प्रकार आचरणमें लाये हुए दूसरेके धर्मसे गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्ममें तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरेका धर्म भयको देनेवाला है॥ ३५॥ अध्याय-3

छोटा सा बच्चा भी मैं आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु को जानता है। फ़लक से कहता है "मैं आत्मा हूँ।" कितने भी बड़े महात्मायें हैं और ब्राह्मण मातायें हैं, मातायें फ़लक से कहती हमने परमात्मा को पा लिया। पा लिया है ना! और महात्मायें क्या कहते? परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है। प्रवृत्ति वाले चैलेन्ज करते हैं कि हम सब प्रवृत्ति में रहते, साथ रहते पवित्र रहते हैं क्योंकि हमारे बीच में बाप है इसलिए दोनों साथ रहते भी सहज पवित्र रह सकते हैं क्योंकि पवित्रता हमारा स्वधर्म है। पर धर्म मुश्किल होता है, स्व धर्म सहज होता है। और लोग क्या कहते? आग और कपूस साथ में रह नहीं सकते। बड़ा मुश्किल है और आप सब क्या कहते? बहुत सहज है। आप सबका शुरू शुरू का एक गीत था - कितने भी सेठ, स्वामी हैं लेकिन एक अल्फ को नहीं जाना है। छोटी सी बिन्दी आत्मा को नहीं जाना लेकिन आप सभी बच्चों ने जान लिया, पा लिया। इतने निश्चय और फ़खुर से बोलते हो, असम्भव सम्भव है। बापदादा भी हर एक बच्चे को विजयी रत्न देख हर्षित होते हैं क्योंकि हिम्मते बच्चे मददे बाप है इसलिए दुनिया के लिए जो असम्भव बातें हैं वह आपके लिए सहज और सम्भव हो गई हैं। फ़खुर रहता है कि हम परमात्मा के डायरेक्ट

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

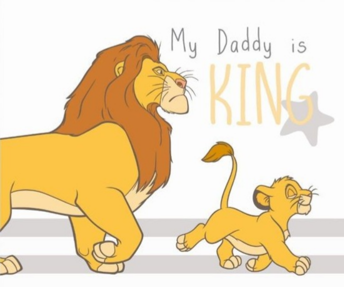


बच्चे हैं! इस नशे के कारण, निश्चय के कारण परमात्म बच्चे होने के कारण माया से भी बचे हुए हो। बच्चा बनना अर्थात् सहज बच जाना। तो बच्चे हो और सब विघ्नों से, समस्याओं से बचे हुए हो।

पुछो अपने आप से...

तो अपने इतने श्रेष्ठ स्वमान को जानते हो ना! क्यों सहज है? क्योंकि आप साइलेन्स की शक्ति द्वारा, परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाते हो। निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर लेते हो। माया कितने भी समस्या के रूप में आती है लेकिन आप परिवर्तन की शक्ति से, साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना देते हो। कारण को निवारण रूप में बदल देते हो। है ना इतनी ताकत? कोर्स भी कराते हो ना! निगेटिव को पॉजिटिव करने की विधि सिखाते हो। यह परिवर्तन शक्ति बाप द्वारा वर्से में मिली है। एक ही शक्ति नहीं, सर्वशक्तियां परमात्म वर्सा मिला है, इसीलिए बापदादा हर रोज़ कहते हैं, हर रोज़ मुरली सुनते हो ना! तो हर रोज़ बापदादा यही कहते - बाप को याद करो और वर्से को याद करो। बाप की याद भी सहज क्यों आती है? जब वर्से की प्राप्ति को याद करते तो बाप की याद

अब आप को जो पा लिया है तो हमें और कुछ भी नहीं चाहिए मेरे बाबा...

जो भी पाना था वो सब कुछ पा लीया है मेरे प्राण प्यारे बाबा...

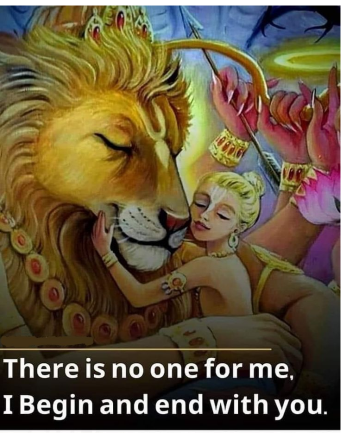


प्राप्ति के कारण सहज आ जाती है। हर एक बच्चे को यह रूहानी फ़खुर रहता है, दिल में गीत गाते हैं - पाना था वो पा लिया। सभी के दिल में यह स्वत: ही गीत बजता है ना! फ़खुर है ना! जितना इस फ़खुर में रहेंगे तो फ़खुर की निशानी है, बेफिक्र होंगे। अगर किसी भी प्रकार का संकल्प में, बोल में या सम्बन्ध-सम्पर्क में फिकर रहता है तो फ़खुर नहीं है। बापदादा ने बेफिक्र बादशाह बनाया है। बोलो, बेफिक्र बादशाह हो? हैं तो हाथ उठाओ जो बेफिकर बादशाह हैं? बेफिकर हो या कभी-कभी फिकर आ जाता है? अच्छा है। जब बाप बेफिक्र है, तो बच्चों को क्या फिकर है।

बेफिकर बादशाह

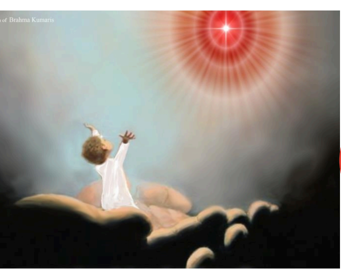

बापदादा ने तो कह दिया है सब फिक्र वा किसी भी प्रकार का बोझ है तो बापदादा को दे दो। बाप सागर है ना। तो बोझ सारा समा जायेगा। कभी बापदादा बच्चों का एक गीत सुनके मुस्कराता है। पता है कौन सा गीत? क्या करें, कैसे करें.... कभी-कभी तो गाते हो ना। बापदादा तो सुनता रहता है। लेकिन बापदादा सभी बच्चों को यही कहते हैं - हे मीठे बच्चे, लाडले बच्चे साक्षी-दृष्टा के स्थिति की

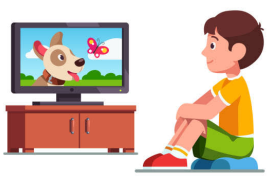

सीट पर सेट हो जाओ और सीट पर सेट होके खेल देखो, बहुत मज़ा आयेगा, वाह! त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो जाओ। सीट से नीचे आते इसलिए अपसेट होते हो। सेट रहो तो अपसेट नहीं होंगे।

कौन सी तीन चीज़ें बच्चों को परेशान करती हैं?

1- चंचल मन, 2- भटकती बुद्धि और 3- पुराने संस्कार। बापदादा को बच्चों की एक बात सुनकर हंसी आती है, पता है कौन सी बात है? कहते हैं बाबा क्या करें, मेरे पुराने संस्कार हैं ना! बापदादा मुस्कराता है। जब कह ही रहे हो, मेरे संस्कार, तो मेरा बनाया है? तो मेरे पर तो अधिकार होता ही है।

Subtle Psychology

जब पुराने संस्कार को मेरा बना दिया, तो मेरा तो जगह लेगा ना! क्या यह ब्राह्मण आत्मा कह सकती है मेरे संस्कार? मेरा-मेरा कहा है तो मेरे ने अपनी जगह बना दी है। आप ब्राह्मण मेरा नहीं कह सकते। यह पास्ट जीवन के संस्कार हैं। शूद्र जीवन के संस्कार हैं। ब्राह्मण जीवन के नहीं हैं। तो मेरा-मेरा कहा है तो वह भी मेरे अधिकार से बैठ गये हैं। ब्राह्मण जीवन के श्रेष्ठ संस्कार जानते हो ना! और यह संस्कार जिनको आप पुराने कहते हो, वह भी पुराने नहीं हैं, आप श्रेष्ठ आत्माओं का पुराने ते पुराना संस्कार अनादि और आदि संस्कार है। यह

They are from द्वापर, कलियुग only

समझा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

तो द्वापर, मध्य के संस्कार हैं। तो मध्य के संस्कार को बाप की मदद से समाप्त कर देना, कोई मुश्किल नहीं है। परन्तु होता क्या है? बाप जो सदा

Attention..!

आपके साथ कम्बाइन्ड है, उसे कम्बाइन्ड जान सहयोग नहीं लेते, कम्बाइन्ड का अर्थ ही है समय पर सहयोगी। लेकिन समय पर सहयोग न लेने के कारण मध्य के संस्कार महान बन जाते हैं।

बापदादा जानते हैं कि सभी बच्चे बाप के प्यार के पात्र हैं, अधिकारी हैं। बाबा जानते हैं कि प्यार के कारण ही सभी पहुंच गये हैं। चाहे विदेश से आये हैं, चाहे देश से आये हैं, लेकिन सभी परमात्म प्यार की आकर्षण से अपने घर में पहुंचे हैं। बाप-दादा भी जानते हैं - प्यार में मैजॉरिटी पास हैं। विदेश से प्यार के प्लेन में पहुंच गये हो। बोलो, सभी प्यार की डोर में बंधे हुए यहाँ पहुंच गये हो ना! यह परमात्म प्यार दिल को आराम देने वाला है। अच्छा - जो पहली बार यहाँ पहुचे हैं वह हाथ उठाओ। हाथ हिलाओ। भले पधारे।

New commers

अभी बापदादा ने जो होमवर्क दिया था, याद है होम वर्क? याद है? बापदादा के पास कई तरफ से रिजल्ट आई है। सभी की रिजल्ट नहीं आई है। कोई की कितने परसेन्ट में भी आई है। लेकिन अभी क्या करना है? बापदादा क्या चाहते हैं?

बपदादा हमसे क्या चाहते है?

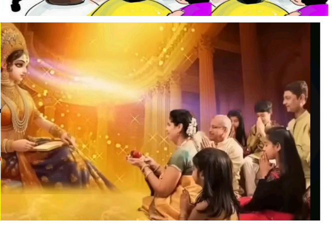

बापदादा यही चाहते हैं कि सब पूज्यनीय आत्मायें हैं, तो पूज्यनीय आत्माओं का विशेष लक्षण दुआ देना ही है। तो आप सभी जानते हो कि आप सभी पूज्यनीय आत्मायें हो? तो यह दुआ देना अर्थात् दुआ लेना अण्डरस्टुड हो जाता है। जो दुआ देता है, जिसको देते हैं उसकी दिल से बार-बार देने वाले के लिए दुआ निकलती है। तो हे पूज्य आत्मायें आपका तो निजी संस्कार है - दुआ देना। अनादि संस्कार है दुआ देना। जब आपके जड़ चित्र भी दुआ दे रहे हैं तो आप चैतन्य पूज्य आत्माओं का तो दुआ देना यह नेचुरल संस्कार है। इसको कहो मेरा संस्कार। मध्य, द्वापर के संस्कार नेचुरल और नेचर हो गये हैं। वास्तव में यह संस्कार दुआ देने के नेचुरल नेचर है। जब किसी को दुआ देते हैं, तो वह आत्मा कितनी खुश होती है, वह खुशी का वायुमण्डल कितना सुखदाई होता है! तो जिन्होंने

भी होमवर्क किया है उन सबको, चाहे आये हैं, चाहे नहीं आये हैं, लेकिन बापदादा के सामने हैं। तो उन्हों को बापदादा मुबारक दे रहे हैं। होमवर्क किया है तो उसे अपनी नेचुरल नेचर बनाते हुए आगे भी करते, कराते रहना। और जिन्होंने थोड़ा बहुत किया है, नहीं भी किया है तो वह सभी अपने को सदा मैं पूज्य आत्मा हूँ, मैं बाप की श्रीमत पर चलने वाली विशेष आत्मा हूँ, इस स्मृति को बार-बार अपनी स्मृति और स्वरूप में लाना क्योंकि हर एक से जब पूछते हैं कि आप क्या बनने वाले हो? तो सब कहते हैं हम लक्ष्मी-नारायण बनने वाले हैं। राम-सीता में कोई नहीं हाथ उठाता। जब लक्ष्य है, 16 कला बनने का। तो 16 कला अर्थात् परमपूज्य, पूज्य आतमा का कर्तव्य ही है - दुआ देना। यह संस्कार चलते-फिरते सहज और सदा के लिए बनाओ। हो ही पूज्य। हो ही 16 कला। लक्ष्य तो यही है ना!

swamaan

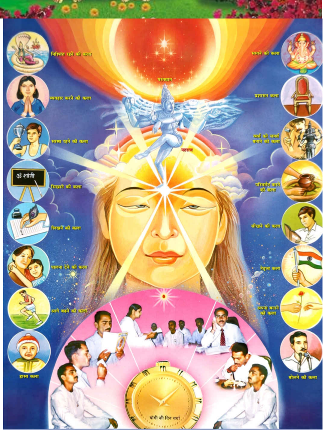

मन से स्वीकार करो

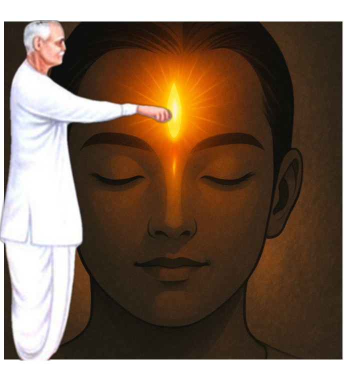

बापदादा खुश है कि जिन्होंने भी किया है, उन्होंने अपने मस्तक में विजय का तिलक बाप द्वारा लगा

दिया। साथ में सेवा के समाचार भी बापदादा के पास सबकी तरफ से, वर्गों की तरफ से, सेन्टर्स की तरफ से बहुत अच्छी रिजल्ट सहित पहुंच गये हैं। तो एक होमवर्क करने की मुबारक और साथ में सेवा की भी मुबारक, पदम-पदमगुणा है। बाप ने देखा कि गांव-गांव में सन्देश देने की सेवा बहुत अच्छे तरीके से मैजॉरिटी एरिया में की है। तो यह सेवा भी रहमदिल बनकर की इसलिए सेवा के उमंग-उत्साह में रिजल्ट भी अच्छी दिखाई दी है। यह मेहनत नहीं की, लेकिन बाप से प्यार अर्थात् सन्देश देने से प्यार, तो प्यार के मुहब्बत में सेवा की है, तो प्यार का रिटर्न सब सेवाधारियों को स्वत: ही बाप का पदम-पदमगुणा प्यार प्राप्त है और होता रहेगा। साथ में सभी अपनी प्यारी दादी को बहुत स्नेह से याद करते हुए, दादी को प्यार का रिटर्न दे रहे हैं, यह प्यार की खुशबू बापदादा के पास बहुत अच्छी तरह से पहुंच गई है।

Left old costume on 25/8/2007

अभी जो भी मधुबन में कार्य चल रहे हैं, चाहे विदेशियों के, चाहे भारत के वह सब कार्य भी एक दो के सहयोग, सम्मान के आधार से बहुत अच्छे

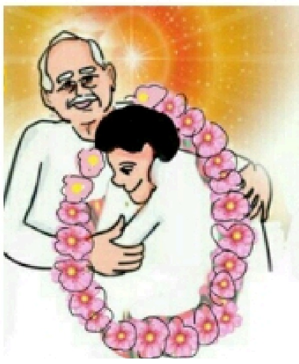

सफल हुए हैं और आगे भी होने वाले कार्य सफल हुए पड़े हैं क्योंकि सफलता तो आपके गले का हार है। बाप के गले के भी हार हो, बाप ने याद दिलाया था कि कभी भी हार नहीं खाना क्योंकि आप बाप के गले के हार हो। तो गले का हार कभी हार नहीं खा सकता। तो हार बनना है या हार खानी है? नहीं ना! हार बनना अच्छा है ना! तो हार कभी नहीं खाना। हार खाने वाले तो अनेक करोड़ों आत्मायें हैं, आप हार बनके गले में पिरोये गये हो। ऐसे है ना!

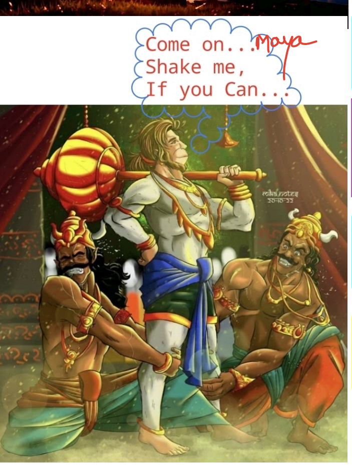


तो संकल्प करो, बाप के प्यार में माया कितने भी तूफान सामने लाये लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के आगे तूफान भी तोह्फा बन जायेगा। ऐसा वरदान सदा याद करो। कितना भी ऊंचा पहाड़ हो, पहाड़ बदल के रूई बन जायेगा। अभी समय की समीपता प्रमाण वरदानों को हर समय अनुभव में लाओ। अनुभव की अथॉरिटी बनो।

Drill/Exercise :-

जब चाहो तब अपने अशरीरी बनने की, फरिश्ता स्वरूप बनने की एक्सरसाइज़ करते रहो। अभी-अभी ब्राह्मण, अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी अशरीरी, चलते फिरते, कामकाज करते हुए भी

याद रहे... माया समय निकालने नहीं देगी, लेकिन हमें कैसे भी करके समय निकालना ही है ये लक्ष्य रखो



एक मिनट, दो मिनट निकाल अभ्यास करो। चेक करो जो संकल्प किया, वही स्वरूप अनुभव किया? अच्छा।

चारों ओर के सदा श्रेष्ठ स्वमानधारी, सदा स्वयं को परमपूज्य और पूर्वज अनुभव करने वाले, सदा अपने को हर सबजेक्ट में अनुभवी स्वरूप बनाने वाले, सदा बाप के दिलतख्त नशीन, भृकुटी के तख्त नशीन, सदा श्रेष्ठ स्थिति के अनुभवों में स्थित रहने वाले, चारों ओर के सभी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

सभी तरफ से सभी के पत्र, ईमेल, समाचार सभी बापदादा के पास पहुंच गये हैं, तो सेवा का फल और बल, सभी सेवाधारियों को प्राप्त है और होता रहेगा। प्यार के पत्र भी बहुत आते हैं, परिवर्तन के पत्र भी बहुत आते हैं। परिवर्तन की शक्ति वालों को बापदादा अमर भव का वरदान दे रहे हैं। जिन सेवाधारियों ने श्रीमत को पूरा फालो किया है, ऐसे

फालो करने वाले बच्चों को बापदादा कहते "सदा फरमानबरदार बच्चे वाह!" बापदादा यह वरदान दे रहे हैं और प्यार वालों को "बहुत-बहुत प्यार से दिल में समाने वाले अति प्यारे और अति माया के विघ्नों से न्यारे", ऐसा वरदान दे रहे हैं। अच्छा।

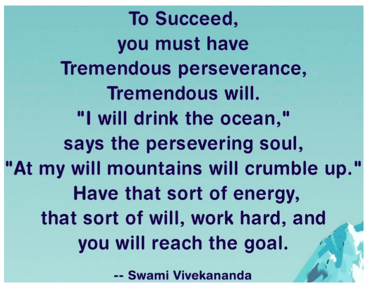


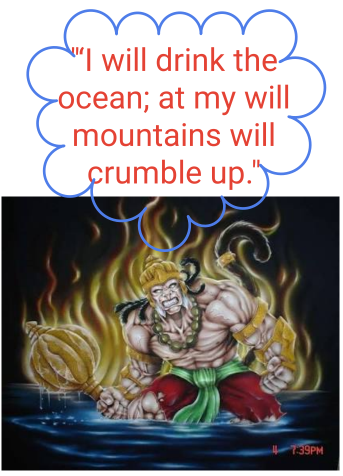


अभी सबके दिल में क्या उमंग आ रहा है? एक ही उमंग बाप समान बनना ही है। है यह उमंग? पाण्डव, हाथ उठाओ। बनना ही है। देखेंगे, बनेंगे, गे गे नहीं करना... लेकिन बनना ही है। पक्का। पक्का? अच्छा। हर एक अपना ओ.के. का कार्ड अपने टीचर के पास चार्ट के रूप में देते रहना। ज्यादा नहीं लिखो, बस एक कार्ड ले लो उसमें ओ.के. लिखो या लाइन डालो, बस। यह तो कर सकते हो ना। लम्बा पत्र नहीं। अच्छा।

O.K. O.K.

## वरदान:- संगमयुग पर प्रत्यक्षफल द्वारा शक्तिशाली बनने वाली सदा समर्थ आत्मा भव

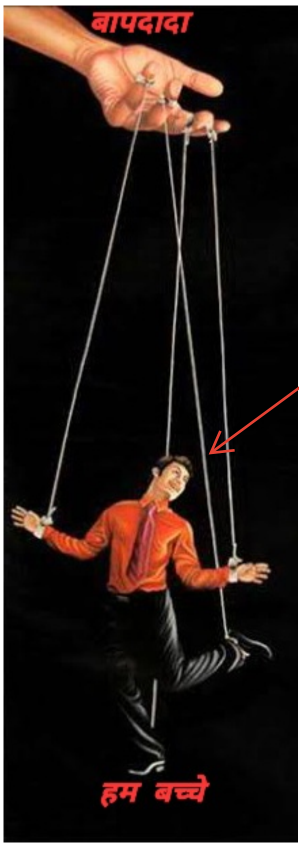


संगमयुग पर जो आत्मायें बेहद सेवा के निमित्त बनती हैं उन्हें निमित्त बनने का प्रत्यक्ष फल शक्ति की प्राप्ति होती है। यह प्रत्यक्षफल ही श्रेष्ठ युग का फल है।

ऐसा फल खाने वाली शक्तिशाली आत्मा किसी भी परिस्थिति के ऊपर सहज ही विजय पा लेती है।

वह समर्थ बाप के साथ होने के कारण व्यर्थ से सहज मुक्त हो जाती है।

जहरीले सांप समान परिस्थिति पर भी उनकी विजय हो जाती है इसलिए यादगार में दिखाते हैं कि श्रीकृष्ण ने सर्प के सिर पर डांस किया।

**स्लोगन:-** पास विद आनर बनकर पास्ट को पास करो और बाप के सदा पास रहो।

**Points:** ज्ञान योग धारणा

## अव्यक्त इशारे -

## अशरीरी व विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ

जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं वैसे ही बच्चों को भी अशरीरी हो करके शरीर में आना है।

अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर व्यक्त में आना है।

Example जैसे इस शरीर को छोड़ना और शरीर को लेना, यह अनुभव सभी को है।

ऐसे ही जब चाहो तब शरीर का भान छोड़कर अशरीरी बन जाओ और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करो।

बिल्कुल ऐसे ही अनुभव हो जैसे यह स्थूल चोला अलग है और चोले को धारण करने वाली मैं आत्मा अलग हूँ।

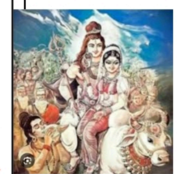

29 बापदादा सभी बच्चों को समान बनने की शुभ भावनाओं से उड़ाने चाहते हैं। निमित्त बने हुए सेवाधारी बाप समान बनने ही हैं, कैसे भी बाप को बनाना ही है क्योंकि ऐसे-वैसे को तो साथ ले ही नहीं जायेंगे। बाप का भी तो शान है ना। बाप सम्पन्न हो और साथी लंगड़ा या लूला हो तो सजेगा नहीं। लूले-लंगड़े बाराती होंगे, साथी नहीं। इसलिए शिव की बारात सदा लूली-लंगड़ी दिखाई गई है क्योंकि कुछ कमजोर आत्मायें धर्मराजपुरी में पास होते लायक बनेंगी।

ये पक्का समझ लो..

2/11/25

**(02-11-1987)**

## 8.2 निद्रा तथा सुस्ती की समस्या

### 8.2.1 अपनी अवस्था को चेक करो :

(अ) अमृतवेला सदा शक्तिशाली है? अमृतवेला शक्तिशाली है, तो सारा दिन शक्तिशाली रहेगा। अमृतवेला कमज़ोर है, तो सारा दिन कमज़ोर। अमृतवेले नियम प्रमाण तो नहीं बैठते हो? यह वरदानों का समय है। तो अमृतवेले का महत्व सदा याद रहता है? उस समय नींद तो नहीं करते हो? झुटके तो नहीं खाते हो ना? कभी-कभी कोई नींद की अवस्था को भी शान्ति की अवस्था समझते हैं। उन्हों से पूछते हैं कैसे बैठे थे? तो कहते हैं — बहुत शान्ति में। तो ऐसी चेकिंग करो कभी शक्तिशाली स्टेज के बीच माया तो नहीं आती है? जो शक्तिशाली है, उसके आगे माया कमज़ोर हो जाती है। तो चेक करो — 'क्या मैं अमृतवेले के महत्व को जानता हूँ?' 2/11/25

ये पक्का समझ लो..

पुछो अपने आप से...

अमृतवेला & सारा दिन
शक्तिशाली शक्तिशाली
कमजोर कमजोर

# सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

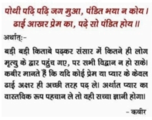

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

Point to be Noted

या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पक्का समझ लो

Short cut

m.m.m.....Imp

Point to be Noted for life time

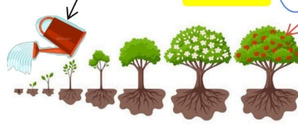

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

30/11/05

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

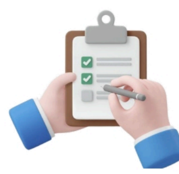

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

**उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।**

**पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।**
**ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥**

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

**Example**

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है
इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।

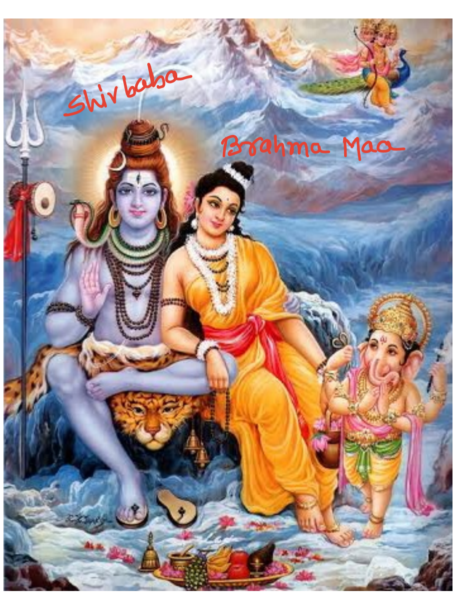


**Example**

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गई किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।

**जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,**
**वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।**
**उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।**
**जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।**

**वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,**
**तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्‌गुरू परन्तु**
**चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।**
**यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।**
**यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।**

**जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।**
**एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',**
**शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानदार' और**
**गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और**
**साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'**

**जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।**

AV- 21/7/73

**जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?**
AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....
क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

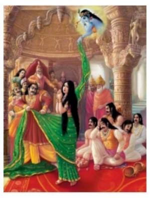

पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। भक्त लोग इन बातों को नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी खुश रहे और इन बातों का सिमरण करते रहें - ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। जो गायन है द्रोपदी का, वह सब प्रैक्टिकल में हो रहा है। द्रोपदी ने क्यों पुकारा? यह मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है - तुम सब द्रोपदियां हो। ऐसे नहीं, फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है, जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं - बाबा रक्षा करो, हमको दुशासन

m. Imp. point to be Noted

limit is set in the drama or say It is the rule of this Game/drama.

vice versa for male costume

इसका अर्थ है कि कोई भी आत्मा हो उसको male एवं female दोनों का पार्ट बजाना ही है

आज आत्मा जो कि युगों से उस सनम/प्रियतम परमात्मा को पाने के लिए प्यासी थी, उसकी सच्चे दिल की रूह रिहान...

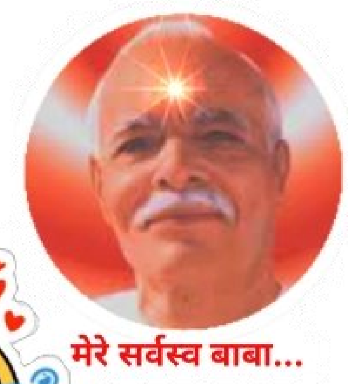


=======¥¥¥¥¥=====
Song from movie: sanam re (2016)

भीगी भीगी सड़कों पे मैं
तेरा इंतज़ार करूँ

(ओ मेरे प्राण प्यारे मीठे सनम...
आपकी अति मीठी यादों में खोकर आंखों से जो प्रेम के आंसू आते है तो उन प्रेम के आंसुओ से भीगी हुई सड़को पर अब तेरा इंतज़ार करता हूँ की कब हम दोनों, दो - ना रहकर एकाकार हो जायेंगे जिसेको ही भक्ति में "ज्योति ज्योत समाया" एवं शिव शक्ति combined रूप में गायन करते है।)

link of song

Click

धीरे-धीरे दिल की ज़मीं को
तेरे ही नाम करूँ

(यूँ तो मेरे दिल की सारी की सारी ज़मीन तुम्हारी हो चुकी है
किन्तु उस जमीन के छोटे छोटे टुकड़ों को धीरे धीरे से तुम्हारे हवालें करूँ
जिससे हर एक टुकड़ा देते समय
उसके एवज में तुम्हारे द्वारा प्राप्त होने वाले सच्चे प्यार का लुत्फ़ उठा सकूँ।)

खुद को मैं यूँ खो दूँ
के फिर ना कभी पाऊँ

(तुजमें अब खुद को ऐसे तो खो दूँ की मुझे दूसरे तो क्या ढूंढेंगे..?
मैं खुद भी अगर चाहूँ तो भी अपने आप को, ना ढूंढ पाऊँ।
मेरा अस्तित्व ही तुझ में मिट जाएं तुझमें - यही सच्चे दिल की ख्वाहिश है - बिल्कुल उस परवाने के मुअफिक - जो शमा पर एक पल की भी सोच के बिना फिदा हो जाता है।)

हौले-हौले ज़िन्दगी को
अब तेरे हवाले करूँ

(ठीक मेरे दिल की जमीन के मुआफिक,
अब मेरी जिंदगी जो की संपूर्ण तुम्हारी हो चुकी है अर्थात उस पे सिर्फ और सिर्फ आपका ही हक है- उसको भी हौले हौले से तुम्हारे नाम करूँ
जिस कारण से हर पल तुम्हारे सच्चे प्यार का लुत्फ़ उठा सकू।)

सनम रे, सनम रे
तू मेरा सनम हुआ रे

(तो ओ मेरे बाबा, मेरे सच्चे साथी...
अब तूम मेरे सनम बन चुके हों।
मैं आत्मा आपकी और आप मेरे, बस..., इसके आगे एक संकल्प भी नहीं।)

करम रे, करम रे
तेरा मुझ पे करम हुआ रे

(चूँ की आपने ही मुझे श्रृष्टि की करोड़ों - करोड़ों आत्माओं में से चुन कर अपना सच्चा परिचय दिया एवम अपना बनाया है, तो ये तुम्हारा ही तो मुज पे करम/एहसान हैं जो इस कलयुग में मेरी डूबती नाँव को सच्चा सहारा दिया वा मुझे अपना बनाया है, जिस साथ को पाने के लिए मैं आत्मा द्वापर से दर-दर भटक रही थी एवं जिस साथ को पाने के लिए भक्त लोग अपना गला भी काटकर रखने को तैयार खड़े है।)

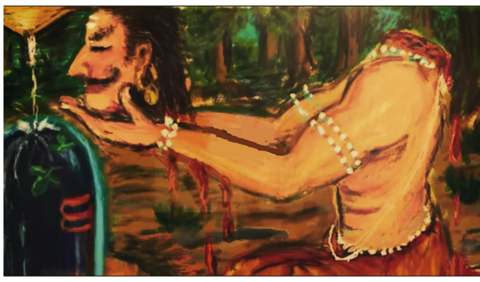

सनम रे, सनम रे
तू मेरा सनम हुआ रे

####====####

तेरे क़रीब जो होने लगा हूँ
तो टूटे सारे भरम रे

(मेरे दिलतख्तनशीन सनम,
तुम्हारे करीब जो होने लगा हूँ तो मुज पर द्वापर से जो भी मायावी भरम थे वो सारे के सारे भरम अब टूटने लगे हैं।
आपका तहे दिल से शुक्रिया मेरे प्राणनाथ...!)

सनम रे, सनम रे
तू मेरा सनम हुआ रे X 2

####%%%####

बादलों की तरह ही तो
तू ने मुझ पे साया किया है

(ओ मेरे प्यारे साजन,
जैसे चिलचिलाती तपती धुप में खुले शिर एवम नंगे पाँव चलते हुए किसी पथिक को, अगर घनघोर बादल आ कर के ठंडा सा साया कर दे तो उसको कितना न सुकूँ  मिलेगा...!

ठीक उसी तरह, तुमने बादलों की तरह आकर मुज आत्मा पर इस कलयुगी एवम मायावी चिलचिलाती तपती तेज धुप में साया किया हैं। आपका पद्मा पद्म शुक्रिया मेरे प्रियतम।)

बारिशों की तरह ही तो
तू ने खुशियों से भिगाया है

(सुकूँ देने वाले बादल रूपी साये के साथ ही
द्वापर से मैं आत्मा - चात्रक पक्षी के मुआफिक, सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे सच्चे प्यार रूपी बारिश की ही प्यासी थी
ऐसे मुज आत्म पंछी/राही पर तुमने तुम्हारे सच्चे प्यार की बारिश करके मुझे खुशियों से भीगा दिया हैं - जिस कारण मेरी खुशियों का तो अब ठिकाना ही नहीं रहा है
जिस कारण, अब तो तुम्हारी यादों में खोई हुई मैं आत्मा हर पल अतिइंद्रिय सुख में ही रहती हूं।)

आँधियों की तरह ही तो
तू ने होश को उड़ाया है

( जो माया की अधीनता वश मैं आत्मा देहाभिमान के होश में थी
अर्थात अपने आप को अविनाशी सच्चे ज्योति रूप में जानने के बजाए विनाशी जूठी देह मान लिया था

तो तुमने आँधियों की तरह आकर के मेरे देहाभिमान रूपी जूठे होश को उड़ा दिया है और मुझे आत्म अभिमानी बना दिया है।
ओ मेरे प्यारे सनम, किन शब्दों में आपका धन्यवाद करू जो मुझे मायावी सभी भ्रमणाओ से पार कराके अपने सच्चे रूप में स्थित करवा दिया है।
मेरे पास शब्दकोश में कोई भी शब्द नही आपका धन्यवाद करने के लिए, बस मेरी आंखों से स्नेहाश्रु ही निकल आते है आपके बेपनाह उपकारों के एवज में ।)

मेरा मुक़द्दर सँवारा है यूँ
नया सवेरा जो लाया है तू

(मेरा मुक्कदर/नसीब को यूँ तो संवारा है की द्वापर से अँधेरे में दर-दर धक्के खा रही मुज आत्मा को अब नया सवेरा मिल गया है तुमसे।

तो....
जो पाना था सो पा लिया।)

तेरे संग ही बिताने हैं मुझको
मेरे सारे जनम रे

(तो अब...
मेरे दिल की यही एक आश एवम ड्रामा से एक ही अर्जी है की भले सभी आत्माएं स्वर्ग में चली जाए...

किन्तु हमको तो त्रेता के अंत या द्वापरयुग के शुरुआत तक के हमारे जो भी जन्म है उसे सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे संग ही बिताने हैं।
हमे नही चाहिए स्वर्ग के सुख....
क्युकी तूम ही तो जन्नत/स्वर्ग हो मेरे ...
In short, मेरा सब कुछ तुमसे ही है। तुझ बिन मैं अधूरी हूं। तुझ बिन मेरा अस्तित्व ही नहीं है।)

सनम रे, सनम रे
तू मेरा सनम हुआ रे
करम रे, करम रे
तेरा मुझ पे करम हुआ रे
सनम रे.

Other Movie Songs to submerge in the love of supreme

Click